लिपि सीखना

ख़ुशी सरकारी विद्यालय में कक्षामें पढ़ती है 2 । अपने पुस्तकालय क्लास में मैंने उसे उसके पसंद की एक कहानी पढ़ने को कहा । फिर क्या था, उस होनहार उत्सुक बच्ची ने शुरुआत के दो शब्द एक " "दिन को इस तरह पढ़ने की कोशिश की।

"ए...से एडी ...क...कबूतर...एक... द..."'ए ...से एडी ...क ....कबूतर ....एक ....द..."

(एक लंबा विराम- ऐसा लगा मानो 'द' तक पहुँचने में वह पूरी वर्णमाला ही याद कर रही हो।)"



द... नल.... न... न... दवा...

उसने शब्दों को एक साथ पढ़ने की कोशिश नहीं की ।

ख़ुशी के पढ़ने के प्रयासों के बारे में आप क्या सोचते हैं ? मुझे यकीन है ऐसा करनेवाली वह अकेली नहीं है; आपने कई बच्चों को ऐसे ही पढ़ने की कोशिश करते देखा होगा।

भारतीय कक्षाओं में आमतौर पर, अक्षर को उससे शुरू होनेवाले किसी शब्द से जोड़कर वर्णमाला पढ़ाई जाती है । शिक्षक विद्यार्थियों से अक्षरों को देखकर हू-ब-हू बार-बार लिखने या वर्णमाला का जाप करने के लिए कहते हैं। इन रटंत अभ्यासों पर शुरुआती वर्षों में हम बहुत समय बिताते हैं। लेकिन क्या आपको लगता है कि ये तरीक़े कारगर हैं ? क्या ये बच्चे इससे पढ़ना सीख पा रहे हैं ? या क्या वे पढ़ी गई बातों को समझ पा रहे हैं ? कम से कम, ख़ुशी तो बिल्कुल भी नहीं।

ऐसी कक्षाओं के एक अध्ययन में आँकड़ों से वास्तव में यह बात सामने आई है कि कक्षा 3 के 20% से भी कम बच्चे अपनी कक्षा-स्तर के शब्दों की सूची को पढ़ पाएं हैं । (Subramaniam et al., 2017)

कई लोगों का ऐसा मानना है कि अंग्रेज़ी की तुलना में भारतीय लिपियों को पढ़ना सीखना आसान है। क्योंकि क्योंकि भारतीय लिपियों में हम प्रतीकों को ठीक वैसा ही लिखते हैं जैसा हम उन्हें बोलते हैंअ ;र्थात प्रतीकोंचिन्हों और / ध्वनियों के बीच में बढ़िया सामंजस्य होता है।लेकिन इसे ऐसे सोचकर देखें – अंग्रेज़ी में केवल 26 अक्षर हैं और यदि

हम बड़े अक्षरों (Upper case) एवं छोटे अक्षरों (Lower case) को अलग-अलग गिनें (जैसा कि हमें करना भी चाहिए) तो भी इसकी ध्वनियों के लिए केवल 52 प्रतीक होंगे। अधिकांश भारतीय लिपियों में कितने प्रतीक हैं? चलिए मराठी को लेते हैं- इसकी वर्णमाला में 49 अक्षर हैं, 12 से 14 मात्राएं हैं और कई सारे संयुक्ताक्षर भी हैं। यदि आप सभी अक्षरों के साथ मात्राओं को भी जोड़ दें तो बच्चों (बारहखड़ी) को इनमें महारत हासिल करने में बहुत कठिनाई होगी।

इसके अलावा हमारे लिपि लिखने का तरीक़ा भी बहुत जटिल होता है । मात्राओं को अक्षरों से जोड़ने के तरीक़ों के बारे में सोचें। जब हम एक मात्रा को किसी अक्षर से जोड़ते हैं तो यह अक्षर के दायीं, बायीं, ऊपर, अथवा नीचे की ओर लगाए जाते हैं । एक वयस्क के रूप में हमें शायद यह अहसास न हो पाए कि इन चीज़ों को सीखना वास्तव में एक बड़ी उपलब्धि है और प्राथमिक शिक्षा के दौरान बच्चों को इन्हें सीखने और इनका अभ्यास करने में बहुत समय और अवसर चाहिए होते हैं ।

तो शिक्षकों को क्या करना चाहिए? अपने छात्रों को लिपि सीखने में हमें और कैसे मदद करनी चाहिए ? इस हैंड आउट में हम इन सवालों के जबाब देने का प्रयास करते हैं। पहले उन कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों को हम साझा कर रहे हैं जिन्हें छात्रों को लिपि सीखने में मदद करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए। फिर हम उन विशिष्ट गतिविधियों और खेलों के बारे में आपको विस्तार से बताएंगे जिसका इस्तेमाल करके आप इन सिद्धांतों को अपनी कक्षा में लागू कर सकते हैं।

लिपि सिखाने के प्रमुख सिद्धांत

ध्वनि और प्रतीकों के संबंधों को स्पष्टता के साथ एवं व्यवस्थित तरीक़े से समझना

जैसा कि हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं, शिक्षक पढ़ाते समय सामान्यतः या तो अक्षरों (लिपि के चिन्हों/प्रतीकों) पर ध्यान देते केंद्रित हैं या फिर उनकी ध्वनियों पर, जैसा कि उदाहरणउदाहरण (क से कबूतर) में बताया गया है। लकिन बच्चों को तो प्रतीकों और उनकी ध्वनियों पर एक साथ ही ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें ऐसी गतिविधियों की ज़रुरत होती है जो ध्वनि और प्रतीक दोनों का ज्ञान एक साथ कराती हो।

भारतीय लिपियों में बहुत-से लिखित प्रतीकों का समावेश है लेकिन इसकी ऐसी कोई विशेष ज़रुरत नहीं है कि उन सबको एक साथ सिखाया जाए।आप कुछ अक्षरों और मात्राओं के समूह को बच्चोंसावधानीपूर्वक चुनकर बच्चों को सिखाना प्रारंभ कर सकते हैं जिससे उन्हें शुरू से ही ऐसे शब्दों को पढ़ने-लिखने का अवसर मिल सके जो वे जानते हैं एवं जिनके अर्थ वे समझते हैं । चित्र 1 में ऐसे ही एक वर्ण-समूह को दिखाया गया है। Organization for Early Literacy Promotion (OELP, Ajmer) अपने साक्षरता कार्यक्रम में इसका उपयोग करती है (जयराम, 2018)।

अक्षर और OELPमात्रा को मिलाकर उसे एक इकाई के रूप में सिखाती है 'की' ई के स्थान पर+क)) इससे बच्चों बच्चों के लिए मात्रा सीखना और शुरुआत से ही अर्थपूर्ण शब्द बनाने में आसानी होती है। परंपरागत शिक्षण पद्धति में बच्चों को मात्राओं का ज्ञान कराने कराने से पहले पूरी वर्णमाला से परिचित कराया जाता है। परिणामस्वरुप कई महीनों तक बच्चे बिना मात्रा के शब्द बनाते हैं। बोलचाल में हम बहुत से शब्दों का प्रयोग करते हैं जिनको लिखने में मात्रा की ज़रुरत होती है, जैसे -"माँ" में 'आ' (ा) की मात्रा, "रोटी" में दो मात्राएं। यदि हम शब्दों से मात्राओं को हटा दें देते हैं तो बच्चों के बनाने के लिए ऐसे शब्द रह जाते हैं जिनका आम बोलचाल में वे शायद ही उपयोग करते हैं। हिंदी भाषी क्षेत्र में 'जल' और 'गज' जैसे शब्दों का अधिकांश छोटे बच्चों के लिए शायद ही कोई मतलब हो।

इसलिए OELP जैसी संस्थाएं शुरुआत से ही बच्चों को मात्राओं से परिचय करवाती हैं ताकि बच्चों को अपने दैनिक जीवन में उपयोग किए जानेवाले शब्दों को पढ़ना-लिखना सीखने में मदद मिल सके। शुरुआत के कुछ वर्णसमू-हों

को सीखने में बच्चों को थोड़ा समय लग सकता है पर एक बार जब वे तर्क को समझ लेते हैं तो बाक़ी समूहों को जानने में उन्हें ज़्यादा समय नहीं लगता।

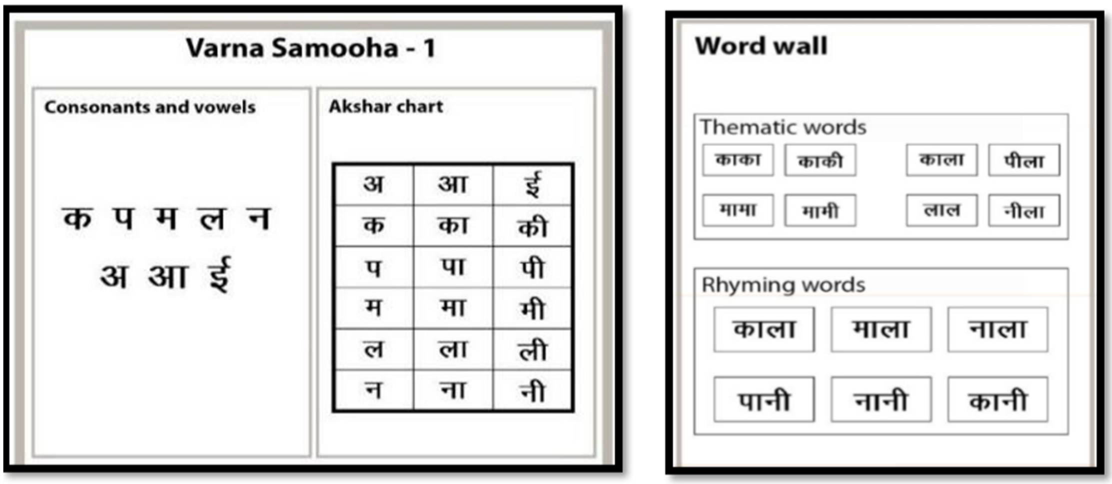


Figure 1. The first *akshara-maatra* grouping (or *varna samooha)* used at OELP, Ajmer

शब्द बनाने और उन्हें समझने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें

बच्चों को लिपि में महारत हासिल करने से पहले इसके उपयोग का बहुत अभ्यास करने की आवश्यकता होती है। यहाँ 'अभ्यास' से हमारा मतलब शब्दों को बोर्ड से देखकर बार-बार उनका नक़ल करना नहीं है। इस प्रकार के अनुभवों से अपरिचित शब्दों को पढ़ना और लिखना शायद वे न सीख पाएँ। बच्चों को यह सीखने में मदद करना कि शब्द कैसे बनाते हैं और कैसे तोड़ते हैं, ही ज़्यादा कारगर है । शब्दों को बनाना और उन्हें समझना, बच्चों को कई चीज़ों के बारे में तार्किक रूप से सोचने में मदद करता है जैसे वे क्या कर रहे हैं, शब्द कैसे बनते हैं और कैसे कुछ शब्द एक-दूसरे से जुड़े होते हैं आदि। वे इस सीख को ऐसे शब्दों को पढ़ने और लिखने के लिए उपयोग कर सकते हैं जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा हो। स्वाभाविक है कि इस प्रक्रिया में उनसे ग़लतियाँ होंगी, लेकिन ये ग़लतियाँ भी बिना सिर-पैर वाली नहीं होतीं। उनके पीछे भी उनके अपने कुछ तर्क होते हैं जो बच्चों की लिपि को उपयोग करने की बढ़ती हुई योग्यता के प्रमाण होते हैं। आगे इस हैंड आउट में आपको शब्द-निर्माण की और उन्हें समझने की कुछ दिलचस्प गतिविधियाँ मिलेंगी।

पढ़ते-लिखते समय शब्दों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

बिना किसी संदर्भ के अलग से शब्द-निर्माण एवं उन्हें हल करना एक महत्वपूर्ण तरीक़ा है जिसमें लिपि को उपयोग करने का अभ्यास होता है। इस अभ्यास को ज़्यादा सार्थक संदर्भ देने के लिए अपने विद्यार्थियों को शब्दों को कहानियों में पढ़ने और संप्रेषण व अभिव्यक्ति के लिए उन्हें लिखने को प्रोत्साहित करें। जब विद्यार्थी ऐसे शब्द लिखते हैं जो उन्हें पढ़ाया नहीं गया है तो सार्थक संप्रेषण के लिए वे ध्वनियों और प्रतीकों के अपने ज्ञान का इस्तेमाल करने के लिए बाध्य होंगे। शुरुआत में वे शब्दों का उच्चारण गलतग़लत लिख सकते हैं पर अभ्यास करते-करते वे शब्दों को समझने में निपुण हो जाते हैं। इस प्रकार के अभ्यास से आपके बच्चे लिपि के प्रयोग में सहज और माहिर हो जायेंगे। पढ़ने-लिखने के दौरान शब्दों के अध्ययन को बढ़ावा देने के कुछ तरीक़ों के बारे में हम इस हैंड आउट में आगे चर्चा करेंगे।

बच्चों को लिपि सीखने और उसे उपयोग करने में मददगार गतिविधियाँ

इस भाग में हम पूर्व में साझा किये गए सिद्धांतों पर आधारित खेल और अन्य गतिविधियों बनाने के लिए कुछ विचार रख रहे हैं। आप अपने बच्चों की ज़रुरत एवं संदर्भों के अनुसार उनमें बदलाव कर सकते हैं।
प्रत्येक गतिविधि में, आप बच्चों से जो करवाना चाहते हैं उसे आपको करके दिखाना होगा। (कृपया ध्यान दें, अक्षरों से मतलब मात्रा और बिना मात्रा वाले दोनों तरह के अक्षरों से है, जैसे- प, मि, बा, ल)

ध्वनि-प्रतीक संबंध की समझ बनाना

आइये इन गतिविधियों को देखते हैं जो बच्चों को अक्षर या वर्ण की पहचान के साथ उनको उनकी ध्वनि से जोड़ने में मदद करती है।

- शुरू में आप बच्चों को कमरे में चारों ओर दौड़ने के लिए कह सकते हैं और किसी ध्वनि (उदाहरण के लिए मु) से शुरू होनेवाली जितनी चीज़ों को वे छू सकते हैं, उन्हें छूने के लिए कहें। इसी तरह आवाज़ बदलते रहें। कुछ समय बाद, इन आवाज़ों को संबंधित अक्षरों के साथ जोड़े बनाकर भी आप शुरू कर सकते हैं, जैसे- (म)।
- जो अक्षर या ध्वनि बच्चे सीख रहे हैं उनसे शुरू होनेवाले शब्द बताने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। बच्चों को प्रक्रिया में शामिल करते हुए उनके बताए गए शब्दों से शब्द कार्ड और पिक्चर कार्ड बना सकते हैं। उन्हें कक्षा में या शब्द-दीवार (वर्ड वाल) पर प्रदर्शित करें और पठनलेखन में आवश्यकतानुसार उनका उपयोग - करें।
- वर्णों और अक्षरों की बारीकियों को दिखाने के लिए अक्षर छाँटने वाली गतिविधि करा सकते हैं। उन्हें अक्षरों के कट आउट या कार्ड दे दें और अलगअलग समूहों में रखने के -अलग विशेषताओं के आधार पर अलग- जैसे ,लिए कहें– उनके नाम में आए हुए अक्षर, वर्णसमूहों के- अक्षर, समान मात्राओं वाले कार्ड। इन कार्डों को क्रमानुसार सजाने के समय बच्चे उस अक्षर की ध्वनि को भी बोलते हैं जिससे प्रतीक ध्वनि-के संबंधों का अभ्यास होगा।
- आप बच्चों के नाम का चार्ट बना सकते हैं और इनका अलगउन्हें :अलग तरीक़े से उपयोग कर सकते हैं- अपने नाम के लिखित स्वरूप को पहचानने के लिए कहना, किसी ख़ास विशेषता वाले नाम खोजना जैसे) (किसी ख़ास ध्वनि से शुरू या अंत होनेवाले नाम, चार्ट का उपयोग करते हुए अपना या दोस्तों के नाम लिखने के लिए कहना आउट से नाम बनाना आदि।-अक्षरों के कट ,

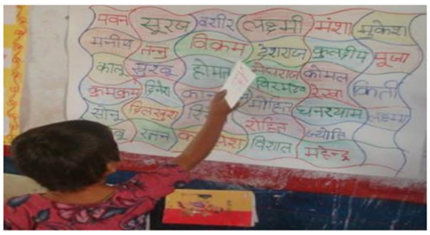


Figure 2. Child matching a name card with corresponding name on the name chart (OELP)



Figure 3. Object sort by beginning sound at OELP, Ajmer

चित्र में एक बच्चा नाम कार्ड से 2 किसी नाम को चार्ट में खोजते हुए दिखाया गया है।

- छोटे बच्चों को चित्रों, लेबल और स्वनिर्मित वर्तनी के साथ कहानी लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके कार्य को कक्षा में प्रदर्शित करें। पढ़ाये गए शब्दों की नक़ल करने के बजाय अपने ख़ुद के शब्दों को लिखने

की कोशिश करने से सीखे जा रहे अक्षरों को उनकी ध्वनियों से जोड़ने में मदद मिलेगी। कृपया उनके सीखने के दौरान लंबे समय तक उनके द्वारा ग़लत हिज्जे आने की उम्मीद करें। आपका काम इस समय उनके हिज्जे ठीक करना नहीं है। बच्चा जो अभिव्यक्त करने की कोशिश कर रहा है उसके अनुकूल जवाब देकर उनकी लिखने की प्रेरणा को बनाए रखें। आपको उनके हिज्जे की त्रुटियों में भी एक पैटर्न मिलेगा। बाद में, इनमें से एक या दो पैटर्न को लेकर छोटे समूहों पर काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि बच्चा अक्सर लिखते समय मात्रा लगाना भूल जाता है तो ऐसे सभी बच्चों का एक समूह बनाकर संबंधित त्रुटी को ठीक करने के लिए आप सत्र ले सकते हैं।

- बच्चों के अक्षरों की समझ को जाँचने के लिए या दो समान दिखनेवाले अक्षरों में अंतर दिखाने के लिए (उदाहरण के लिए कन्नड़ में ಠ [थ] और ಠ [र थ-या हिंदी में य [, ध।(घ- आप जिन अक्षरों को जाँचना चाहते हैंज़मीन पर गोले बनाकर उन अक्षरों का लेबल लगाइए ,। अपने विद्यार्थियों को इन ध्वनियों से शुरू होनेवाले दैनिक उपयोग की वस्तुएं दे दीजिए। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है 3, विद्यर्थियों को वस्तुओं को छाँटकर जिस ध्वनि से वस्तु का नाम शुरू होता है उसे उसी अक्षर वाले गोले पर रखना है। आप उनसे पूछ सकते हैं कि उन्होंने उसी घेरे में क्यों रखा। अक्षरों के बीच के अंतर को सीधे बताने के बजाय उन्हें स्वयं खोजने देना ज़्यादा कारगर है।

शब्द बनाने और उन्हें समझने में विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करना

ये गतिविधियाँ शब्द बनाते समय बच्चों को सक्रियता से सोचने में मदद करती हैं।

शब्द:निर्माण- बच्चों को समूहों में बांट दें और हर समूह को ,मात्राओं को अक्षरों के साथ मिलाकर) अक्षर दें 10 । इन अक्षरों से जितने ज़्यादा सार्थक शब्द वे बना सकते है उन्हें बनाकर दिखाने के लिए कहें।(ली ,बा ,मि -जैसेआप उन्हें और भी बहुतसे अक्षर कार्ड देकर ख़ास वर्ग के शब्-द बनाने के लिए कह सकते हैं जैसे परिवार के रिश्तों के – (मामी ,नानी) नाम, आसस्वर या व्यंजन से शुरू होने वाले ,तीन या चार अक्षरों वाले शब्द ,दो ,पास की चीज़ों के नाम- जैसे बच्चे और अक्षर सीखते जाते हैं आप इसका स्तर और भी बढ़ा सकते हैं। बच्चे इन- शब्द आदि। जैसे गतिविधियों का आनंद भी लेंगे और वाक्य भी बनाना शुरू कर देंगे। चित्र में 4OELP, अजमेर में शब्दनिर्माण - गतिविधि की एक झलक दिखाई गई है।



Figure 4. Word Making (OELP, Ajmer)

बाद में ये लोग इन शब्दों को अपनी नोटबुक में भी लिख सकते है और इनके चित्र भी बना सकते हैं। आप कक्षा में इन्हें प्रदर्शित कर सकते है या वर्ड-वाल पर इन शब्दों के साथ कार्ड लगा सकते हैं। खेल के रूप में आप उन्हें कमरे में दौड़ते हुए उनके द्वारा पढ़े गए शब्दों को छूने के लिए कह सकते हैं । आप इस प्रिंट का दूसरे तरीक़े से भी उपयोग कर सकते हैं (जैसे लेखन के समय हिज्जे बताने में)।

यह गतिविधि लिपि को मौखिक भाषा से जोड़ने का बढ़िया तरीक़ा है क्योंकि बच्चे मौखिक भाषा में परिचित चीज़ों के ही सार्थक शब्द बनाते हैं ।

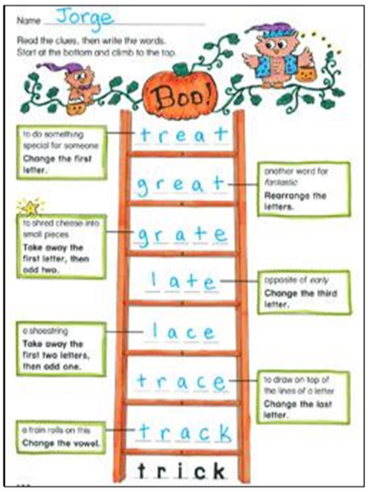


Figure 5. Word Ladder (Rasinski, 2005)



Figure 6. Chitra Paheli from *Chakmak* magazine

वास्तव में जैसा कि हमने शुरू में उल्लेख किया है, OELP जैसी संस्था बड़ी ही सावधानी से अपने प्रारंभिक अक्षरों-मात्राओं को चुनती है ताकि बच्चे अपनी घर की भाषा में इस्तेमाल होने वाले आम शब्दों का निर्माण शुरु से ही करने लग जाएं।

शब्द पहेली** – शब्दों की सीढ़ी और क्रॉसवर्ड पज़ल : चित्र 5 में शब्द-सीढ़ी दिखाया गया है। हम एक शब्द से शुरु करते हैं (उदाहरण के लिए trick)। फिर हर चरण में हम अगले शब्द का अर्थ या वर्तनी के बारे में छात्रों को कोई संकेत देते हैं। तदनुसार, वे दिए गए शब्द में कोई letter जोड़कर, हटाकर या दिए गए शब्द के letters को फिर से व्यवस्थित कर सही उत्तर निकालते हैं। (जैसे track-दिए गए संकेत ***'जिस पर ट्रेन चलती है; trick शब्द में स्वर को बदलो' के उत्तर में) बच्चों को इन संकेतों को हल करने में मज़ा आता है ! इस बात का उन्हें भान भी नहीं होता कि वे सही उत्तर पाने के लिए ध्वनि और प्रतीकों के संबंधों के साथ-साथ शब्द के अर्थ के बारे में भी सोच रहे हैं। क्रॉसवर्ड पज़ल और पिक्चर पज़ल (जैसा कि चित्र 6 में दिखाया गया है) भी ऐसे ही काम करते हैं। आप बच्चों को अपने सहपाठियों के साथ साझा करने के लिए इस तरह के शब्द-सीढ़ी और क्रॉसवर्ड बनाने हेतु प्रोत्साहित कर सकते हैं।

शब्द अंताक्षरी आप अपने विद्यार्थियों को उनके द्वारा काम किए जा रहे वर्ण-समूह के आधार पर अक्षर कार्ड्स दें। एक बच्चा अक्षर कार्ड्स से एक शब्द बनाएगा, फिर दूसरा बच्चा उस शब्द के अंतिम अक्षर से नया शब्द बनाएगा। फिर इस तरह ये क्रम चलता जायेगा। शब्द को मौखिक रूप से बताने के अलावा बच्चों को कार्ड्स के माध्यम से शब्द की वर्तनी भी बताने के लिए कहा जाता है। इससे बच्चों की ध्वनि-प्रतीक संबंधों की समझ मज़बूत होती है।

***शब्दों को छाँटना-** इसमें बच्चे शब्दों की उनकी ख़ासविशेषता के आधार पर तुलना करते हैं एवं छाँटकर उन्हें अलग करते हैं। आप इस गतिविधि को पैटर्न से परिचित कराने एवं किसी अवधारणा को समेकित करने या उसकी समझ जाँचने के लिए भी उपयोग कर सकते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि शब्दों को अलग कैसे करना है। बच्चों को आप पहले स्वयं इसे करके दिखाएं, ख़ासख़ासतौर से जब आप पहली बार शब्दों की किसी ख़ास ख़ास विशेषता का 'पता लगाने' में बच्चों की मदद कर रहें हों। उदाहरण के लिए आप अंग्रेज़ी में लंबी e और छोटी e की आवाज़ का परिचय कराने जा रहे हैं। आप लंबी और छोटी e का स्पष्ट उच्चारण करते हुए शब्दों को पढ़ें और बच्चों के सामने दोनों कार्ड्स अलग-अलग रखें और उनसे पूछें कि इन दोनों में वे क्या अंतर देख पा रहे हैं।

जैसा कि चित्र 7 में दिखाया गया है, आप बच्चों को दो कार्ड्स दिखाएं (छोटी e की आवाज़ के लिए WEB और लंबी ee की आवाज़ के लिए QUEEN)। फिर उन्हें कुछ संकेत दें (क्या उन्हें बीच में एक जैसी आवाज़ ही मिल रही है?)। एक बार जब वे ये अंतर जान जायें तो बीच की आवाज़ के आधार पर दो चित्र कार्ड्स के नीचे शब्दों को रखकर सेट को एक साथ सजाएं (e और ee की अलग-अलग श्रेणी)। इस प्रक्रिया के ज़ारी रहने के दौरान बच्चों द्वारा बताई जानेवाली ख़ास विशेषताओं (जैसे- एक e वाले सभी शब्द web के नीचे)पर चर्चा करें। आप वैसे शब्दों के लिए ऐसे समूह भी बना सकते हैं जो दूसरे समूह के लिए उपयुक्त नहीं है (जैसे been)। अंत में प्रत्येक समूह के लिए केवल एक मुख्य शब्द छोड़कर सभी कार्ड्स हटा दें। बच्चों को अलग-अलग समूह के लिए शब्द छाँटने के लिए प्रोत्साहित करें। बाद के चरणों में, 'ee' spelling वाले कार्ड एवं 'ea' spelling वाले कार्ड को अलग-अलग करके लंबी e वाले समूह में और बारीक़ अंतर भी दिखा सकते हैं।

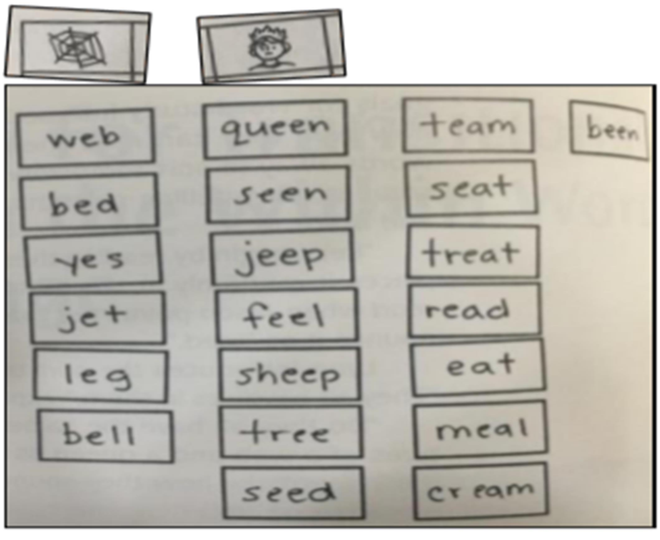


Figure 7. Word sort for short-e and long-e patterns (Bear et. al, 2004)

शब्द छाँटना, बच्चों को उनकी सीख को जाँचने और समेकित करने में भी मदद करता है। उदाहरण के लिए, यदि आप हिन्दी में मात्रा आ और ई पर बच्चों की समझ पक्की करना चाहते है तो आप उनको ऐसे शब्दों के शब्द-कार्ड्स का set दे सकते हैं जिनके अंत में ये मात्राएँ आती हों, (जैसे- मात्रा 'आ' के लिए पीना, गला, काला, मामा और मात्रा ई के लिए नानी, कापी, पानी, कली)।इन शब्दों के अंतिम ध्वनि 'आ' या 'ई' पर केंद्रित करते हुए अलग-अलग करके दिखाइए। फिर आप उन्हें ऐसा स्वयं करने के लिए कह सकते हैं। बच्चे इन्हें अपने नोटबुक में लिख सकते हैं या चार्ट पर प्रदर्शित कर सकते हैं जिसमें वे बाद में और भी शब्द जोड़ते रहें।

शब्द अलग-अलग करने के लिए और भी कई श्रेणियाँ हो सकती है, जैसे किसी विशेष व्यंजन (या व्यंजन समूह) से शुरू या अंत होने वाले शब्द, तुकांत शब्द, समान/ विपरीत अर्थ वाले शब्द, संज्ञा शब्द, विशेषण शब्द, एकवचन/बहुवचन, बहुवचन बनाने के विभिन्न तरीक़े, एक ही शब्द से व्युत्पन्न शब्द आदि। (Bear et al., 2004; Pinnell and Fountas, 1998).

यहाँ महत्वपूर्ण यह है कि बच्चे उन शब्दों के बारे में बात करें जिन्हें वे अलग कर रहें हैं जिससे शब्दों को अलग करने के सामान्य सिद्धांतों पर उनकी समझ बढ़े।

पढ़ने-लिखने में शब्द समाधान को प्रोत्साहन

क्या आपने गौर किया है कि बच्चे जब अपनी पसंद की या अपने जीवन के अनुभव से जुड़ी चीज़ें पढ़-लिख रहे होते हैं तो वे उसमें कैसे लगे रहते हैं ? ये सब वे सार्थक अवसर हैं जिनमें बच्चे वर्ण, ध्वनि और शब्दों के बारे में जो जानते हैं उनका अभ्यास कर सकें। लेकिन बच्चे शायद इतनी सहजता से ये सब न कर पाएं। आप अपने बच्चों को कौन-सी जानकारी को कैसे उपयोग करना है, इस बारे में बताएं । इस भाग में हम पठन और लेखन से संबंधित प्रामाणिक अवसरों के कक्षा में निर्माण को लेकर कुछ तरीक़ों के बारे में चर्चा करेंगे. शब्दों की समझ इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है ।

शेयर्ड रीडिंग (साझा पठन)

शेयर्ड रीडिंग शुरूआती पाठकों को पढ़ने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए लुभाने का एक अच्छा तरीक़ा है। उन पाठों को साझा करने का प्रयास करें जिनमें दोहरावपूर्ण या पूर्वानुमान वाले वाक्य पैटर्न हैं और बड़े प्रिंट में उपलब्ध है। इस पाठ को एक दो बार ज़ोर से पढ़ने के बाद छात्रों को अपने साथ पढ़ने के लिए कहें लेकिन उन्हें अपने बाद पढ़ने से रोकें। बीच-बीच में रुकें और उन्हें प्रिंट और शब्दों की विशिष्ट विशेषताओं को दिखाएं और पाठ में जो शब्द आते हैं उनका कैसे हल (अर्थ) निकालना है, यह भी बताएं। ख़याल रहें कि वो किस चीज़ के लिए तैयार हैं। उदाहरण के लिए आप उन्हें तुकान्त शब्द या फिर किसी ख़ास अक्षर या मात्रा से शुरू होनेवाले शब्द को चुनने के लिए कह सकते हैं । यदि आपकी कक्षा में शेयर्ड रीडिंग के लिए बिग बुक्स नहीं है तो चिंता ना करें।आप उन किताबों का भी उपयोग कर सकते हैं जो साझा लेखन के दौरान आप छात्रों के साथ मिलकर बनाते हैं।

निर्देशित पठन (Guided Reading) यह गतिविधि छात्रों की धाराप्रवाह - यह गतिविधि छात्रों के पढ़ने की धाराप्रवाहिता और रणनीति को सुधारने में मदद करती है । आप कक्षा को बच्चों के पढ़ने की क्षमता के अनुसार 3-4 समूहों में विभाजित करें और उनके पठन स्तर के अनुसार उन्हें गद्यांश/पुस्तक पढ़ने को दें । प्रत्येक समूह में बच्चों को बताएं कि पाठ किस बारे में है, इस पाठ में उन्हें क्या मिल सकता है और ऐसे पाठ का परिचय कराएं। पाठ के 2-3 शब्दों को चुनकर बच्चों को बताएं जो उनके लिए नए हो सकते हैं या पढ़ने के लिहाज़ से कठिन हो सकते हैं। विद्यार्थियों को पाठ को स्वयं से पढ़ने दें। कुछ मिनटों के लिए प्रत्येक बच्चे का निरीक्षण करें और उन शब्दों को पढ़कर बताएं जिन्हें पढ़ने में बच्चे संघर्ष कर रहे हैं। अगर इस पाठ में कोई शब्द हल करनेवाला (अर्थ निकालने वाला) पहलू है जिससे पूरे समूह को मदद मिल सकती है तो इसे पढ़ने के बाद समूह में इसपर चर्चा करें। इस चर्चा को बच्चों ने पढ़कर क्या समझा है इस पर भी ध्यान केंद्रित करें। इस तरह Guided reading, पढ़ने के पहले,

पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद कई अवसर प्रदान करता है जिसमें बच्चों को आप यह सीखा सकते हैं कि पुस्तकों और पाठों को पढ़ने के संदर्भ में शब्द कैसे काम करते हैं ।

इंटरएक्टिव /शेयर्ड राइटिंग (साझा लेखन)- बहुत छोटे बच्चों को भी शुरू से ही लिखने का नियमित अवसर प्रदान करें, चाहे उनका लिखना गोदा-गादी (scribbling), चित्र या लेबलिंग ही हो। आखिर यहीं तो वे अपनी सोच और अनुभूति को व्यक्त करने के लिए लिखित प्रतीकों को इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं।

इंटरएक्टिव/साझा लेखन में शिक्षक और बच्चे मिलकर कोई संदेश या पाठ की रचना कर सकते हैं जिसमें चार्ट या ब्लैक बोर्ड पर लिखने की प्राथमिक ज़िम्मेदारी शिक्षक ले लें। लिखने में शिक्षक बच्चों की भी मदद लें। यह कक्षा नियमों की सूची, एक बच्चे की कहानी ,एक पत्र या एक कक्षा यात्रा से अवलोकन रिकॉर्ड करने के लिए भी हो सकता है । छात्रों को आगे आने को कहें और एक अक्षर, एक शब्द या विराम-चिन्ह जोड़ने के लिए आमंत्रित करें । उनके उम्र और समूह की ज़रूरत के आधार पर यह रचना कुछ भी हो सकती है जैसे कक्षा के नियमों की सूची, किसी बच्चे की कहानी, कोई पत्र, खाना बनाने कि विधि, कक्षा द्वारा किए गए किसी भ्रमण का अवलोकन आदि। समूह की आवश्यकता और बच्चे की उम्र के हिसाब से बच्चों को कोई वर्ण, शब्द या विराम-चिन्ह जोड़ने के लिए बुलाएँ। इस पाठ को कक्षा में सार्थक प्रिंट के तौर पर सहेज कर रखें जिसे आगे शेयर्ड रीडिंग के दौरान इस्तेमाल किया जा सकता है।

निर्देशित लेखन /लेखन कार्यशाला (Guided Writing / Writing Workshop)

शेयर्ड रीडिंग के अलावा छोटे बच्चों को शिक्षक के मार्गदर्शन से व्यक्तिगत रूप से लिखने के लिए भी समय की आवश्यकता होती है। यहाँ ज़ोर संदेश और अभिव्यक्ति के लिए लेखन पर है या विभिन्न प्रकार के लेखन के बारे में सीखने पर है (जैसे वास्तविक बनाम काल्पनिक कहानी या कविता या पत्र लेखन ।)   जिस विषय पर गाइडेड राइटिंग आप कराने वाले हैं उसके किसी ख़ास पहलू या उद्देश्य पर चर्चा करके गाइडेड राइटिंग शुरू कर सकते हैं. इसके शुरुआत में आप लेखन अभ्यास,   कर सकते हैं।(उदाहरण के लिए- जिस प्रकार की कविता आप बच्चों से लिखवाना चाहते हैं उसका उदाहरण दें और उनके साथ इसपर चर्चा करें।) फिर बच्चे अपनी-अपनी रचना पर व्यक्तिगत रूप से काम करेंगे । इस दौरान आप कक्षा में घूम-घूम कर उनके द्वारा लिखी जा रही रचना पर बातचीत कर उनकी सराहना कर सकते हैं एवं उनकी ताक़त को पहचानकर उन्हें विशिष्ट विचारों के साथ काम करने दे सकते हैं। अंत में उनमें से कुछ को समूह में साझा करें और सत्र को समाप्त करें। भले ही वर्तनी इन पाठों का मुख्य केंद्र नहीं है, फिर भी जब बच्चों को सार्थक संदर्भों में अभ्यास के नियमित अवसर मिलता है तो वे पढ़ने-लिखने में बेहतर होते जाते हैं। बच्चों को एक ही रचना के कई-कई ड्राफ्ट लिखने के लिए और अंत में जब वे रचना के अंतिम स्वरुप को अपने श्रोताओं के साथ साझा करने के लिए तैयार हों तब प्रूफ़-रीडिंग व वर्तनी पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। ये श्रोता उनके सहपाठी, दूसरी कक्षा के बच्चे या उसके माता-पिता/अभिभावक हो सकते हैं। प्रूफ़-रीडिंग के बाद रचना के अंतिम स्वरुप को कक्षा की दीवारों पर लगा सकते हैं या शिक्षक द्वारा बनाए गए ‘क्लास-बुक’ में शामिल कर सकते हैं। अपनी रचना को दूसरों के साथ साझा करने का विचार बच्चों को अपने लेखन के दूसरे आयामों पर काम करने के साथ-साथ वर्तनी पर काम करने के लिए प्रेरित करता है।

उपसंहार

आशा है, इस हैंड आउट के माध्यम से हम यह दिखा पाए हैं कि लिपि सीखना उबाऊ और थकाऊ हो ऐसा ज़रूरी नहीं है। हाँ, हमें लिपि को व्यवस्थित ढंग से और स्पष्टता से सिखाने की ज़रुरत है, लेकिन इसके लिए हम दिलचस्प और सार्थक गतिविधियों का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा, बिना संदर्भ के शब्दों के पृथक अध्ययन (खंड 1

व 2 में वर्णित गतिविधियाँ) में भाषा कक्षा के दौरान प्रतिदिन 20-30 मिनट से ज़्यादा समय नहीं लगाना चाहिए। हम यह भी आशा करते हैं कि हम आपको यह यक़ीन दिलाने में सफल हुए हैं कि बच्चों को अर्थपूर्ण शब्दों और वाक्यों को पढ़ने-लिखने के पहले सभी अक्षरों और मात्राओं को सीखने की आवश्यकता नहीं हैं। इसलिए, अपने बच्चों को वास्तविक पठन-लेखन कार्यों में शुरू से ही लगाने का प्रयास करें जिसमें शब्दों को हल करने के कार्यों को पठन-लेखन के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में रखें । कुल मिलाकर, शब्द-अध्ययन को भाषा-शिक्षण के दूसरे उद्देश्यों जैसे - आनंद के लिए पढ़ना, अभिव्यक्ति के लिए लिखना, समझ के लिए पढ़ना इत्यादि के साथ संतुलन बनाने का प्रयास करें। जब बच्चे लिखित भाषा के विभिन्न आयामों के साथ संलग्न हो जाते हैं तब वे जल्द ही स्वतंत्रतापूर्वक और प्रभावी तरीक़े से पढ़ने-लिखने के राह में होंगे।

Adapted from ELI Handout 06 (2019): ‘Learning the script’